UP Board Notes Class 8 Hindi Chapter 9 गोस्वामी तुलसीदास (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

इनका जन्म यमुना तट पर स्थित राजापुर (चित्रकूट) में हुआ। बचपन में ही इनके पिता आत्माराम दूबे और माता हुलसी का देहावसान होने पर इन्हें सन्त नरहरिदास ने अपने आश्रम में आश्रय दिया। पन्द्रह वर्ष तक अध्ययन करके ये राजापुर आए और रत्नावली से विवाह किया। पत्नी की तीखी बातों से विरक्त होकर ये साधु वेश धारण करके श्रीराम की भक्ति को समर्पित हो गए।

भक्ति में लीन तुलसी को काशी में हनुमान और चित्रकूट में श्रीराम के दर्शन हुए। चित्रकूट से तुलसी अयोध्या आए। यहीं संवत् 1631 ई० में उन्होंने 'रामचरितमानस' की रचना आरम्भ की। यह दो वर्ष सात माह और छब्बीस दिनों में संवत् 1633 में पूरी हुई। जनभाषा में लिखा यह ग्रन्थ- रामचरितमानस, न केवल भारतीय साहित्य का बल्कि विश्व साहित्य का अद्वितीय ग्रन्थ है। इसका अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं के साथ विश्व की अनेक भाषाओं में हुआ है।

रामचरितमानसे में श्रीराम के चरित्र का वर्णन है। इसमें जीवन के सभी पहलुओं का नीतिगत वर्णन है। भाई का भाई के साथ, पति का पत्नी से, पत्नी का पति से, गुरु को शिष्य के प्रति, प्रजा का राजा से और राजा का प्रजा से कैसा व्यवहार होना चाहिए, उसका सजीव चित्रण है। राम की रावण पर विजय इस बात का प्रतीक है कि अच्छाई की बुराई पर, सत्य की असत्य पर विजय होती है। तुलसी ने जीवन में सुख के लिए-न्याय, सत्य और प्राणीमात्र से प्रेम को अनिवार्य माना है। तुलसी ने रामचरितमानस जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया है। इसके अलावा तुलसी ने अन्य ग्रन्थ जैस विनयपत्रिका, कवितावली, दोहावली व गीतावली आदि भी लिखे।

तुलसीदास समन्वयवादी थे। बड़े विद्वान और कवि अब्दुर्रहीम खानखाना, जो तुलसी के मित्र थे, उनकी प्रशंसा में लिखा है-"गोद लिए हुलसी फिरे, तुलसी सो सुत होय।" तुलसीदास अपने अन्तिम समय में काशी में अस्सीघाट पर रहते थे। वहीं इनका देहावसान संवत् 1680 में हुआ। भक्त व साहित्यकार तुलसी हिन्दी भाषा के अमूल्य रत्न हैं।

https://www.evidyarthi.in/